माघ का प्रकृति-चित्रण

देवर्षि कलानाथ शास्त्री

(राष्ट्रपति सम्मानित), प्रधान सम्पादक ''भारती''संस्कृत मासिक
पीठाचार्य, भाषामीमांसा एवं शास्त्रशोध पीठ - विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर
पूर्व अध्यक्ष - राजस्थान संस्कृत अकादमी
आधुनिक संस्कृत पीठ - जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय
पूर्व निदेशक - संस्कृत शिक्षा एवं भाषा विभाग, राजस्थान सरकार
सदस्य - संस्कृत आयोग, भारत सरकार

कवि की भावयित्री प्रतिभा प्रकृति के कोमल स्पर्श से ही जागती है। यही कारण है कि विश्व के सभी देशों में प्रत्येक कवि प्रकृति का अपने दृष्टिकोण से पर्यवेक्षण कर उसके प्रति अपनी संवेदनात्मक प्रतिक्रिया अपने काव्य में अवश्य व्यक्त करता है। संस्कृत के कवियों ने भी प्रारम्भ से ही प्रकृति के विभिन्न पक्षों और क्रियाकलापों को अपनी सूक्ष्म दृष्टि से हृदयंगम किया है और अपने-अपने ढंग से उसका चित्रण किया है। वैदिक ऋषियों में तो उषा के अरुणोदय का दृश्य देख कर सोता हुआ कवि जाग पड़ता है। वे उषा को कभी नवयौवन तरुणी के रूप में देखते हैं तो कभी सूर्य को प्रेमी के रूप में। आदिकवि वाल्मीकि का प्रकृति पर्यवेक्षण सर्वाधिक सहज और स्वाभाविक है। कालिदास ने भी प्रकृति चित्रण स्वाभाविक और सीधे शब्दों में किया है किन्तु कहीं-कहीं काव्योचित अलंकारों, उपमाओं, उत्प्रेक्षाओं, उद्भावनाओं और मनोरम मानवीय रूपकों का थोड़ा सा स्पर्श दे कर उन्होंने उसे सजाया सँवारा भी है। संस्कृत के महाकवियों में कालिदास को जहाँ सहज शैली का शुद्ध रसवादी कवि माना जाता है वहाँ माघ और भारवि को अलंकृत शैली का प्रौढ़ अलंकारवादी कवि कहा जाता है। इसी कारण राजस्थान के मूर्धन्य महाकवि माघ का प्रकृति वर्णन भी अलंकृत शैली में ढला हुआ है। वे प्रकृति के विभिन्न क्रियाकलापों को उत्प्रेक्षा, रूपक आदि अलंकारों के झरोखे से देख कर अपनी प्रौढ़ और अलंकारमय शब्दावली में निबद्ध कर महाकवि सुलभ भारी भरकम शैली में प्रस्तुत करते हैं।

जैसा कहा जा चुका है रैवतक पर्वत का वर्णन करते हुए माघ वह दृश्य हमें दिखाते हैं जब अरुणोदय से पूर्व पूर्णिमा का गोल चन्द्रमा पहाड़ से नीचे की ओर अस्त होने जा रहा है और पहाड़ के एक ओर घण्टे की तरह लटकता हुआ

लगता है, दूसरी ओर लाल सूर्य का गोला उदित हो रहा है और पहाड़ के दूसरी ओर लटकते हुए घंटे की तरह लग रहा है। कवि उस क्षण पहाड़ को ऐसे हाथी की उपमा देता है जिसके दोनों ओर दो घंटे लटके हुए हों।

उदयति विततोर्ध्वरश्मिरज्जवाहिमरुचौ हिमधाम्नि याति चास्तम्।
वहति गिरिरयं विलम्बिघटाद्वय-परिवारि-तवारणेन्द्रलीलाम्।।

इस श्लोक में प्रकृति के एक दृश्य को चित्रोपम शैली में निबद्ध किया गया है किन्तु इसमें विद्वज्जनों को अधिक चमत्कार पर्वत को हाथी की और सूर्य और चन्द्रमा को लटकने वाले घंटों की उपमा में दिखलाई दिया है। तभी तो इस श्लोक को लेकर महाकवि माघ को 'घंटामाघ' कहा जाने लगा था।

माघ के प्रकृति वर्णन के प्रायः प्रत्येक श्लोक में प्रकृति के किसी भी पक्ष का जो वर्णन मिलता है उसमें इस प्रकार का अलंकार चमत्कार अवश्य दिखलाई देता है। एक पद्य में जो पहले भी उद्धृत है, उन्होंने सूर्योदय का वर्णन करते हुए समुद्र के उस पार क्षितिज से उठते हुए सूर्य को कलश की उपमा दी है और कहा है कि दिशा रूपी महिलाएँ किरणों की डोरियों से बंधे सूर्य रूपी कलश को मानो समुद्र से ऊपर खींच रही हैं।

वितत-पृथुवरत्रातुल्यरूपैर्मयूखैः कलश इव गरीयान् दिग्भिराकृष्यमाणः।
कृतचपल-विहंगालापकोलाहलाभिर्जलनिधि-जलमध्यादेष उत्तार्यतेर्कः।

इस प्रकार आलंकारिक प्रकृति वर्णन पर अधिक जोर देते हुए भी महाकवि माघ ने अनेक स्थलों पर ऐसी कोमल और मनोरम भावनाएँ भी प्रकृति के विभिन्न दृश्यों में गूँथ दी हैं जो बुद्धि के साथ-साथ हृदय को भी झकझोर देती हैं। ऐसे स्थल प्रकृति के मानवीकरण द्वारा उसके विभिन्न कार्यकलापों में मानवीय भावनाओं के आरोपण के स्थल हैं। पर्वत की उपत्यकाओं से उड़ते पक्षियों के कलरव में माघ ने बूढ़े पर्वत का क्रन्दन देखा है। पर्वत क्यों क्रन्दन कर रहा है? इसलिये कि उसकी गोद में पल कर बहने वाली नदियाँ जो उसकी पुत्रियाँ हैं अब अपने ससुराल अपने पति समुद्र से मिलने विदा हो रही हैं। इस विदाई पर वह बिलख रहा है।

अपशंकमंकपरिवर्तनोचिताश्चलिताः पुरः पतिमुपेतुमात्मजाः।
अनुरोदितीव करुणेन पत्रिणां विरुतेन वत्सलतयैष निम्नगाः।

यह सब देखते हुए भी माघ का कवित्व चरम उत्कर्ष को पहुँचने के लिए अलंकार चमत्कार का ही सहारा अधिक लेता है। अपने एकमात्र महाकाव्य शिशुपालवध के छठे सर्ग में माघ विभिन्न ऋतुओं का वर्णन करते हुए यमक, श्लेष

आदि शब्दालंकारों और अनेक अर्थालंकारों से सजा कर मनोरम शब्द शय्या में अनेक पद्य प्रस्तुत करते हैं। ऐसे पद्य शब्दलालित्य, अलंकृत शैली और प्रकृति वर्णन तीनों का त्रिवेणी संगम उपस्थित कर देते हैं। एक दो नमूने ही पर्याप्त होंगे।

दलित-कोमल-पाटल-कुड्मले निजवधूश्वसितानुविधायिनि ।
मरुति वाति विलासिभिरुन्मदभ्रमदलौ मदलौल्यमुपाददे ।।

स्फुरदधीर-तडिन्नयना मुहुः प्रियमिवागलितारुपयोधरा।
जलधरावलिरप्रतिपालितस्वसमया समयाज्जगतीधरम् ।।

समय एव करोति बलाबलं प्रणिगदन्त इतीव शरीरिणाम्।
शरदि हंसरवा परुषीकृत-स्वरमयूरमयू रमणीयताम् ।।

वर्षा में फूलों को दलित करने वाली और भौरों को बहकाने वाली हवाओं के चलते ही विलासिगण मस्त होने लगते हैं। वर्षा ऋतु उत्सुक नायिका की भाँति चंचला रूपी नयनों में अधीरता और उन्नत पयोधरों का भार लिये समय से पूर्व ही अपने प्रिय पर्वत की ओर अभिसरण करने लगती है। वर्षा चली जाती है और शरद् ऋतु आती है। समय के पलटा खाते ही मयूरों की केकाएँ जो वर्षा में मधुर लगती थीं कठोर लगने लगती हैं और हंस ध्वनि मधुर लगने लगती है।

प्राकृतिक दृश्यों के अलावा पशुओं और पक्षियों की प्रकृति के पर्यवेक्षण और चित्रण में भी माघ ने सूक्ष्म निरीक्षण का परिचय दिया है। जंगल में चरते हुए ऊँट का वर्णन माघ ने बड़ी सजीवता के साथ किया है। ऊँट आम का पत्ता नहीं खाता, इसलिये जब नीम और बबूल के पत्ते खाते-खाते उसका मुँह अचानक आम के पेड़ पर चला जाता है तो वह झट से आम के पत्ते को उगल देता है।

सार्धं कथंचिदुचितैः पिचुमर्दपत्रैरास्यान्तरालगतमाम्रदलं प्रदीयः ।
दासेरकः सपदि संवलितं निषादैर्विप्रं पुरा पतगराडिव निर्जगार ।।

ऊँट की इस आदत का परिज्ञान भी इसका एक प्रमाण है कि माघ राजस्थान के अंचल के निवासी थे।

परिमाणात्मक दृष्टि से देखा जाये तो प्रकृति वर्णन के प्रसंग में माघ ने सर्वाधिक उपयोग समासोक्ति अलंकार का किया है। यह अलंकार अपने आप में मानवीकरण का ही अलंकार है। जब कवि किसी भी वर्णनीय स्थान, स्थिति या

घटना का चित्रण करते हुए उसमें मानवीय भावनाओं और स्थितियों का आरोपण करता है तो समासोक्ति अलंकार माना जाता है। माघ ने प्रकृति के प्रायः प्रत्येक कार्यकलाप को मानवीय रंगों में रंग कर रखा है। पहले कुछ उदाहरण दिये जा चुके हैं। शिशुपालवध के नवें सर्ग में मनोरम प्रमिताक्षरा छन्दों में संध्या, प्रभात आदि का वर्णन करते हुए माघ ने कभी ढलते सूर्य की विवशता और अन्तिम क्षणों की चलाचली की बेला की असहायता का चित्रण किया है तो कहीं दिन ढलने के दृश्य में उम्र ढलने की मार्मिक और कचोटने वाली टीस को सटीक शब्दों में रख दिया है-

प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ विफलत्वमेति बहुसाधनता।
अवलम्बनाय दिनभर्तुरभून्न पतिष्यतः करसहस्त्रमपि।।

विरलातपच्छविरनुष्णवपुः परितो विपाण्डु दधदभ्रशिरः।
अभवद्गतः परिणतिं शिथिलः परिमन्द-सूर्यनयनो दिवसः॥

अर्थात् दिन ढल चला है। जवानी की धूप अब समाप्त हो चली है, शरीर में गर्मी नहीं रही। बादलों के रुई जैसे टुकड़ों की सफेदी सिर पर झलकने लगी है। सूरज रूपी नयनों की ज्योति मन्द हो चली है।

अपनी अलंकृत शैली की योजनाओं में महाकवि माघ ने जहाँ-जहाँ ऐसे मानवीकरण का पुट दिया है, वहाँ उनका प्रकृति चित्रण बड़ा मार्मिक बन पड़ा है।

यह मानवीकरण की शैली- हिन्दी में परवर्ती छायावाद के मानवीकरण की पूर्वज लगती हो तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए।